Volume-3, Issue-04, April 2016 ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal
(RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.com

-कबीर की प्रासंगिकता-

डॉ.सुशीला एस व्यास
श्रीमती सी.आर.गार्डी आर्ट्स कॉलेज,मुनपुर
तहसील-कडाना जिला-महिसागर,३८९२४०

वर्तमान समय की धार्मिक संकीर्णताओं एवं सामाजिक अव्यवस्था के कारण समीक्षा जगत में प्रासंगिकता शब्द का प्रयोग होने लगा हैं । प्रासंगिकता का अर्थ वर्तमान के संदर्भ में अतीत को परखना । रमेशचंन्द्र शाह के अनुसार रचना की प्रासंगिकता का निकष इकहरा नही हो सकता क्योंकी वह रचना की प्रासंगिकता का निकष है जिसकी रचनात्मकता काव्य संस्कृति के मूल्यों पर भी प्रासंगिकता हो । इसके साथ ही रचना वह प्रासंगिक है जो अपने समय की मानव सच्चाइयों का उनकी पूरी जटीलता में साक्षात्कार कराती हो । यह दोहरी प्रासंगिकता रचना की राह में हर अवरोध को हर रचनाद्रोही परिस्थितियों को तोडनेवाली होंगी और मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाली होगी । जाहिर है कि यह तभी हो सकता है, जब रचना मात्र समसामयिक ही न हो बल्कि मनुष्य मात्र की स्वतंत्रता को कुण्ठित करनेवाले हर खतरे को सूंघ लेनेवाली हो । अतीत की वर्तमानता को पहचाननेवाली हो ।

कबीर साहित्य की प्रासंगिकता से तात्पर्य वर्तमान समय में उसकी सार्थकता से हैं । भारत वर्ष के मध्ययुगीन इतिहास की सबसे प्रमुख घटना भक्ति आंदोलन है । हिन्दी साहित्य के इतिहास में चौदहवी शती के मध्य से सत्रहवी शती के मध्य का समय भक्तिकाल का रहा इस काल में भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुई-सगुण और निर्गुण । सगुण भक्ति साकार के प्रति और निर्गुण भक्ति निराकार के प्रति थी । सगुण के अंतर्गत रामभक्ति साहित्य एवं कृष्ण भक्ति साहित्य तथा निर्गुण के अंतर्गत संतसाहित्य एवं सूफी साहित्य सामने आया ।

जब सवाल मध्यकाल के कबीर साहित्य की सार्थकता को लेकर उठता है तब हम देखते है कि मध्यकाल की परिस्थितियों एवं आज की परिस्थितियों में व्यापक रुप में बदलाव आया है । परंतुं मानव सभ्यता के इतिहास में प्राचीन काल से लेकर आज तक मनुष्य की शारीरिक रचना में कोइ बदलाव नही आया । मनुष्य की मनोवृत्तियों में भी कोइ परिवर्तन नही आया । प्राचीनकाल का मनुष्य लोभी,क्रोभी,स्वार्थी एवं मोहमाया से मुक्त था । और आज का मनुष्य भी वैसा ही है । विज्ञान एवं तकनीकि के विकास के इस युग में मानव मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह लग गया है । भैतिक विकास के साथ साथ सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो रहे है । धर्म,राजनीति और समाज आदि विभिन्न एवं विविध क्षेत्रो में जागरुक

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

व्यक्ति आज भावात्मक एकता,मानव अधिकार एवं उनकी सुरक्षा की महत्ता एवं आश्यकता अनुभव कर रहे है। कबीर के साहित्य ने मध्यकाल में इसके लिए व्यापक भाव भूमि प्रस्तुत कर दी थी।

एक संस्कृत कहावत है कविमनीषिः परिभूस्वयम्भूः। अर्थात कवि एवं चिन्तक स्वयंभू हुआ करते है,इसी प्रकार उनका चिन्तन भी स्वयंभू एवं शाश्वत हुआ करता है। कवि और दार्शनिक सत्य के शोधक हुआ करते है। उनका सत्य संम्पूर्ण मानव समाज के लिए कल्याणकारी होता है। कबीर की दृष्टि अभेद मूलक थी। वे शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन से प्रभावित थे। आत्मा और परत्मा में उन्हों ने भेद नही माना। उनका कहना था की संम्पूर्ण सृष्टि ईश्र द्वारा निर्मित है एवं सृष्टि के कण कण में ईश्वर का निवास है। –

लाली मेरे लाल की, जित देखो तितलाल।

लाली देखन में गई,में भी हो गई लाल।।१

कबीर अद्वैत वादी थे। सम्पूर्ण सृष्टि में ईश्वर की व्यापकता को देखते थे। परमात्मा मंदीर और मस्जिद की चार दीवारियों में काबा और कैलास नामक स्थानों में तथा यौगिक क्रियाओं के व्दारा प्राप्त नही किया जा सकता। निर्मल मन होकर जो भी प्रभु से मिलने की ललक रखता है उसे अवश्य वे मिलते है –

"मोको कहां ढूंढे बन्दे मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल ना मैं मसजिद,न काबे कैलास में।

।---- कहै कबीर सुनौ भाई साधो सब स्वासों की स्वांस में" ।२

कबीरने धार्मिक आडंबर और गलत रुढियों का विरोध कर उन्हें समाज से निकाल फेंकने का प्रयास किया। धार्मिक स्थलों के आडंबर का विरोध करते हुए कबीर लिखते है –

कांकर पाथर जोरि के मस्जिद देय चनाय।

ता चढ मुल्ला बांग दे क्या बहरा मया खुदाम।।३

कबीर मंदीर,मस्जिद,माला,तिलक,तीर्थयात्रा,हजयात्रा,रोजा,नमाज आदी को व्यर्थ बताते हुए एसा करने वाले को पाखंडी-दंभी कहते थे। निर्गुण निराकार को आराध्य मानने वाले कबीर मूर्तिपूजा का विरोध करते हुए कहते है –

पाहन पूजे हरि मिले तो में पूजों पहाड।

ताते वह चक्की भली पीस खाय संसार।।४

कबीर जाती भेंद और धर्म भेंद के विरोंधी थे। आज भी जातीवाद हमारे समाज को घून की तरह अन्दर ही अन्दर खा रहा है। आज भी प्राचीनकाल से चली आ रही वर्ण व्यवस्थाने इन्सानियत को खत्म कर दिया है। कबीर में समाज को स्वच्छ और स्वस्थ देखने की अभिलाषा थी। उनका कहना था की-

"संतन जात न पूछों निर्गुणियां"

"अरे इन दोउन राह न पाई"

जातिपाति के भेंद को व्यर्थ मानते हुए सामाजिक समानता का संदेश दिया है। कबीर की यह द्रष्टि आज पथप्रदर्शक है। कबीर के सामाजिक समानता के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है। अपने व्यंग्यों और तर्को के द्वारा सामाजिक विषमताओं द्वारा खंडन किया।

" पांडे कौन कुमती तोही लागी

तू राम न जवही अभागी

वेद पुरान पढत अस पांडे,खर चंदन जैसे भारा।

राम नाम तत समझत नाहीं,अन्त पडे मुखि छारा।

जन्म मरण थैं तौ तूँ छूटे सुफल हीह सब कामा।"६

कबीर का युग सामाजिक असमानता और धार्मिक मतभेंद का युग था। अपने अपने धर्म और उपासना पद्धति की वकालत करते हुए साम्प्रदायिक तनाव पैदा करना साधारण कार्य था। एसे समय में कबीर ने एकेश्वरवाद का संदेश

दिया जो आज भी प्रासंगिक है । जो धर्म एवं साधना भेंदभाव की दीवारें खडी करें वह धर्म नही है । मनुष्य को कट्टरवादी,आतंकवादी एवं असहिष्णु बनाने वाले धर्म का कबीर ने खुलकर विरोध किया । उनका कहना था की परमेश्वर एक है जो जड और चेतन सब में व्याप्त है । जिसे कोई राम और कोई रहीम कहकर पुकारता है । इस लिए हिन्दू और मुसलमानों का लडना मूर्खतापूर्ण है । पंचतत्व से हिन्दू और मुसलमानों दोनो के शरीरों की रचना होती है । जैसे-

"हिन्दू कहूँ तो हाँ नही,मुसलमान भी नाहीं ।

पाँच तत्व का पूतला, गैवासैले माँहि ।।"

आज का मनुष्य संवेदन शून्य और अमानविय हो गया है । एसे समय में कबीर के विचार मनुष्य को मनुष्य बनने की शिक्षा देते है । समाज का अस्तित्व प्रेम पर आधारित है । प्रेम के अभाव में मानव समाज की संघटना कमजोर रहती है । कबीर आध्यात्मिक प्रेम के साथ साथ जगत को बांधने वाले प्रेम की भी बात करते है । आज आदमी एक दूसरे के सामने तलवार लिए खडा है । अलग अलग धर्मो के बीच शांति स्थापित करने के लिए प्रेम का व्यवहार कठिन होते हुए भी आवश्यक है । –

जिहि घटि प्रीती न प्रेमरस पुनि रसना नही राम ।

ते नर इस संसार में उपजिषये बेकाम ।।७

समाज की आधारशीला व्यक्ति और समूह का चरित्र हुआ करती है । चरित्र का संबद्ध आचरण से है । कबीर धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में आचरण की शुद्धता पर बल देते है । विज्ञान और टेकनोलोजी के इस युग में नैतिकता खत्म हो चुकी है । शोषण,भ्रष्टाचार,व्यक्तिगत स्वार्थ बढता जा रहा है । आज समाजवाद का आधार न धर्म है न नैतिकता है और न है पूरे समाज की उन्नति । समाजवाद और धर्म निरपेक्षताकी आड में व्यक्तिवाद,स्वार्थवाद,शोषणवाद,आतंकवाद दिनदुना रात चौ गुना बढ रहा है । आज की शिक्षा मनुष्य को अनैतिकता की और ले जा रही है । कबीर के विचार नैतिकता की शिक्षा देते है । कबीर का सिद्धांत है कि मनुष्य ईश्वर की शरण में जाये, सद विचारों के लिए,आत्मबल के लिए,अभेद मार्ग पर चलने के लिए,क्रोध-लोभ से बचने के लिए । जब मनुष्य जीवन में भेंद न मानेगा,जीव ईश्वर को एक मानेगा तब वह कैसे किसी के साथ विश्वासघात कर सकता है,कैसे दूसरे

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

को धोखा दे सकता है,कैसे किसी का गला घोंट सकता है और कैसे भ्रष्टाचार की रोटी खा सकता है। अतः कबीर का आध्यात्म ही एक मात्र सतपथ है व्यक्ति और समाज दोनो के उद्धार का। समाज में समानता तब तक नही आ सकती जब तक की व्यक्ति अध्यात्ममार्गी बनकर शुद्ध बनने का प्रयत्न न करें।८ कबीर उस समाज को आदर्श मानते है जिस समाज के व्यक्ति में दानशीलता,उदारता,जीवदया,कर्मनिष्ढा,कर्तव्यबोध,आत्मीयता और सहिष्णुता हो। सहिष्णुता आचारवान का प्रमुख लक्षण है। कबीर कहते है – मन लागो मेरे यार गकीरी में.....साहब मिले सबुरी में

कबीर का समय आर्थिक विषमता से युक्त था। सामंतो द्वारा सामान्य जन का शोषण होता था। आज भी आर्थिक विषमता से युक्त समाज व्यवस्था में आम आदमी की स्थिति दयनिय है। श्रम का अधिक से अधिक मूल्य पूंजीपति वर्ग ले रहा है। एक अर्थशास्त्री के रुप में कबीर ने आर्थिक स्थिति के बारे में जो उक्ति कही वह आज भी प्रासंगिक है –

सांई इतना दीजिए जा में कुटम्ब समाय।
में भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।।९

कबीर का धर्म मानव धर्म था। उनके विचारों में श्रेष्ठ विश्व की कल्पना है। उनकी साधना विभिन्न सम्प्रदायों और धर्मो से अलग विश्वधर्म की स्थापना करती है। इनकी वाणी में विश्व बंन्धुत्व की भावना साकार होती है। मानव मूल्यों की रक्षा के लिए कबीर का साहित्य सार्थक है। साम्प्रदायिकता,जातिवाद,गैर बराबरी,हिंसा से स्त्रस्त भारतीय समाज के लिए कबीर की वाणी औषधी है।

संदर्भसूची:

१ कबीर ग्रंथावली,रामकिशोर शर्मा क.सं. ५० पृ.११०

२ कबीर ग्रंथावली,रामकिशोर शर्मा क.सं. ४५७ पृ.५८०

३ साखी संग्रह पृ.१८३

४ कबीर वचनावली क.सं. १९८ पृ.२४३

५ कबीर ग्रंथावली,रामकिशोर शर्मा क.सं. ४५८ पृ.५८०

६ कबीर ग्रंथावली,रामकिशोर शर्मा क.सं. ३९ पृ.३३५

७ कबीर ग्रंथावली,रामकिशोर शर्मा क.सं. १७ पृ.१२४

८ गुल हरिहरःवैष्णव कबीरःरहस्यवाद-मानवतावाद पृ.११०

९ कबीर वचनावली क.सं. १४९ पृ.१०७